कोई कहे सबे ब्रह्म है, तब तो अज्ञान कछुए नाहीं ।
तो षट सास्त्र भये काहे को, मोहे ऐसी आवत मन माहीं ॥५६॥

श्री जी ने कहा कि आप कहते हैं कि ब्रह्म सब के अंदर है तो संसार में कोई भी व्यक्ति अज्ञानी नहीं होना चाहिए तो षट दर्शन किसके वास्ते बने हैं । मेरे मन में यह संशय है । इसे आप मिटाइये ।

ए सबे षट दर्सनी, षट सास्त्र अचारज जोए ।
न्यारे न्यारे मत सबे, सुने श्री राज नें सोए ॥५७॥

ये सब खट दर्शनी तथा छः शास्त्रों के आचार्यों के अलग-अलग मत को श्री जी ने सुना । श्री जी के प्रश्नों का कोई भी उत्तर नहीं दे सका ।

तब सब मत मारग नें मिलके, कही श्री जी सों विख्यात ।
अपने मत हम सब कहे, अब आप कहो साख्यात ॥५८॥

तब सब सम्प्रदायों के आचार्यों ने मिलकर श्री जी से कहा कि हे स्वामी जी ! हम सबने अपने-अपने मत की व्याख्या आपसे कही है । अब आप कृपया अपनी पहचान कराइये ।

कौन सास्त्र में कहां कही है, सो हमें कहो दे साख ।
नई राह है तुम्हारी, सो कहो हमें विध भाख ॥५९॥

आप भी कृपया हर बात की साक्षी कहां और किस शास्त्र में लिखी है उसे कहकर बताइये । मालूम होता है कि आपका सम्प्रदाय नया है । कृपया हमें उसके विषय में अच्छी तरह समझाइये ।

(श्री जी का जवाब)

कही व्यास हरवंस में, देखो संत विचार ।
जनमेजय राजा प्रते, सुनो विरोध तज सार ॥६०॥

तब आप श्री जी ने उत्तर दिया कि हमारी पहचान हरिवंश पुराण में व्यास जी ने राजा जनमेजय से कही है । कृपया अपने मन से विरोध को हटाकर उसे सुनिए ।

कही अनहोनी व्यासें नृपसों, नृप सुन पूछत सोए ।
ब्रह्म रूप मुनि प्रकट हैं, दुर्घट सब थे जोए ॥६१॥

व्यास जी ने जनमेजय से कहा कि हे राजा ! एक अनहोनी बात होने वाली है । राजा ने यह सुनकर व्यास जी से पूछा कि वह अनहोनी क्या बात है ? व्यास जी ने कहा कि हे राजा ! ब्रह्ममुनि इस जगत में प्रगट होंगे । यह सबसे अनहोनी बात है ।

Nijanand App

नृप तब पूछी व्यास सों, सनकादिक थें सोए ।
तुम लों ऋषि बहु प्रगटे, क्या ब्रह्म रूप तुम ना होए ॥६२॥

तब राजा ने व्यास जी से पूछा कि सनकादिक से लेकर आप तक बहुत ऋषि प्रगट हुए हैं । क्या आपमें से कोई भी ब्रह्म रूप अर्थात् ब्रह्ममुनि नहीं हुआ ।

तब व्यासें नृप सों कही, वे भये नहीं कोई काल ।
हू हैं प्रकट कलयुग में, प्रगट आए के हाल ॥६३॥

तब व्यास जी ने उत्तर दिया कि वे किसी भी काल में प्रगट हुए ही नहीं । वे ब्रह्ममुनि केवल अट्ठाइसवें कलियुग में ही प्रगट होंगे ।

उत्तम पुरूष बिन और को, देवी देव न ध्याये ।
अकथ कथा नवतन कहे, जग सुन पूजे ताये ॥६४॥

वे ब्रह्ममुनि उत्तम पुरूष पारब्रह्म के बिना अन्य किसी भी देवी-देवता की पूजा नहीं करेंगे और ऐसा ज्ञान कहेंगे जो किसी ने भी नहीं कहा होगा और जो दुनियां के लिये नया होगा अर्थात् वे पारब्रह्म की पहचान करायेंगे जिसे सुन कर सारे जगत के लोग उनकी पूजा करेंगे ।

ए व्यासें नृप सों कही, बहुत विध विस्तार ।
तिनकी साख जो देत हों, देखो संत विचार ॥६५॥

व्यास जी ने राजा जनमेजय से जो कहा है उसका बहुत अधिक विस्तार है । मैंने आपको साक्षी दी है । आप उसे देख कर समझ सकते हैं ।

श्लोक : उक्तम् च हरिवंशे भविष्योत्तरे
अभाविनो भविष्यन्ति मुनयो ब्रह्मरूपिणः ।
उत्पन्ना ये कलौयुगे, प्रधान पुरूषाश्रयाः ॥
कथायोगेन तान्सर्वान् पूजयिष्यन्ति मानवाः ।
यस्य पूजा प्रभावेन जीव सृष्टि उद्धारणम् ॥

(हरिवंश पुराण, भविष्य पर्व, अ० ४, श्लोक २१-२२)

हे राजा ! उत्तम पुरूष अक्षरातीत के आश्रय में रहने वाले ब्रह्म रूप मुनि कलियुग में प्रगट होंगे जो आज तक कभी भी इस जगत में प्रगट नहीं हुए थे । उनके द्वारा कहे हुए अलौकिक ब्रह्म ज्ञान को सुन कर सभी मानव उनकी पूजा करेंगे और उनकी उस पूजा के प्रभाव से जीव सृष्टि का उद्धार होगा अर्थात् वह भवसागर से पार हो जायेंगी ।

Nijanand App

या भांत वेद उपनिषद में, विध विध कही बनाए ।
और अस्टादस पुराण में, आगम सास्त्र लेखाए ॥६६॥

हे संतजनों । इस तरह वेदों और उपनिषदों में तथा १८ पुराणों में से जो भविष्यवाणी के ग्रन्थ हैं उन सबमें हमारी पहचान लिखी है ।

जो ग्राहक या वस्त को, सो लेवे चित ल्याए ।
ताको वेद उपनीषदें, हम सब दे समझाए ॥६७॥

आप सबमें जो इस तत्व को चाहने वाले हो वे ध्यान से सुने । हम उन्हें वेद और उपनिषदों से समझायेंगे।

तब सबने चित में लई, ए नहीं कहूं बंधाए ।
पूछिए धाम क्षेत्र संप्रदा, तब जवाब नहीं आए ॥६८॥

तब सब आचार्यजनों ने मिलकर सोचा कि ये किसी भी तरह से कहीं अटकने वाले नहीं हैं क्योंकि कोई भी ज्ञान इनसे छिपा नहीं है । इनसे इनकी पद्धति, धाम, क्षेत्र और सम्प्रदाय हमें पूछना चाहिए तब ये उनका उत्तर नहीं दे सकेंगे ।

स्वामी विध संप्रदाए की, कहो साख दे सोए ।
ज्यों हम अपनी सब ने कही, त्यों तुम कहो प्रसंन होए ॥६९॥

सबने ऐसा विचार-विमर्श करके कहा कि हे स्वामी जी ! आप कृपया अपने सम्प्रदाय की पहचान सभी साक्षियां देकर बताइये, जिस तरह से हम सबने कही है । आप भी प्रसन्न होकर उत्तर दीजिए ।

करके गर्व बोले सबे, प्रस्न विविध विस्तार ।
साखा सिखा कहो आपनी, फेर कहो सूत्र विचार ॥७०॥

सबने बड़े गर्व के साथ कई प्रश्न कहे । जो निम्नलिखित हैं : १. शाखा २. शिखा ३. सूत्र क्या है? बताइये ।

सेवन अपनो निज कहो, गोत्र इस्ट अरू जाप ।
साधन मंत्र पुरी कहो, कहो देवी परताप ॥७१॥

४. किसकी सेवा भक्ति करते हैं ? ५. अपना गोत्र ६. इष्ट ७. जाप ८. साधन ९. मन्त्र १०. पुरी कहिये ११. अपनी देवी का प्रताप बताइये ।

साला कहिए अपनी, क्षेत्र होए जो कोए ।
सुख विलास रिष देव जो, तीरथ सास्त्र जो होए ॥७२॥

१२. अपनी शाला और १३. क्षेत्र बताइये ? १४. सुख विलास का स्थान तथा १५. ऋषि देव बताइये? १६. तीर्थ तथा १७. शास्त्र क्या है ?

Nijanand App

ग्यान कहिए कुल आपनो, फल और द्वार प्रकास ।
कहां निवास कौन संप्रदा, कहो उत्तर प्रस्न उजास ।।७३।।

१८. अपना ज्ञान बताइये ? १९. अपना कुल, २०. उस ज्ञान का फल, तथा २१. उसका ठिकाना बताइये ? २२. आपका निवास कहां है ? २३. आपका सम्प्रदाय क्या है ? इन प्रश्नों का उत्तर विस्तार से बताइये ।

कृपा द्रस्ट बोले तबे, सुनो साध सब कोए ।
प्रस्न प्रस्न को उत्तर, तुमको दें हम सोए ।।७४।।

आप कृपा करने वाले श्री जी बोले कि हे सन्तजनों ! हम आपके एक-एक प्रश्न का उत्तर समझाकर कहेंगे ।

अकथ भेद अदभुत एह, चित दे सुनो तुम सब ।
कीजो हिरदे विचार, धरो दोस जिन अब ।।७५।।

हमारे सम्प्रदाय के भेद आज दिन तक किसी ने भी खोलकर नहीं बताए । वे भेद अकथ और अलौकिक हैं । अब आप चित्त देकर सुनिए और अपने हृदय में विचार कीजिए । बाद में हमें दोष न देना कि हमें किसी ने बताया नही ।

श्रुति स्मृति की साख दे, कहों तुमें समझाए ।
ग्राहक हो चित दे सुनो, तो कलजुग भ्रम जाए ।।७६।।

हम आपको श्रुति-स्मृति की साक्षी देकर समझाएंगे । जो इस वस्तु का ग्राहक हो, वो चित्त देकर यदि सुने तो उनके सारे संशय दूर हो जाएंगे ।

(श्री निजानन्द सम्प्रदाय)

सतगुर ब्रह्मानंद है, सूत्र है अक्षर रूप ।
सिखा सदा इन सें परे, चेतन चिद जो अनूप ।।७७।।

हमारे सतगुरू पारब्रह्म के आनन्द के स्वरूप श्री श्यामा महारानी हैं । (२) सूत्र हमारा अक्षर रूप है। (३) शिखा हमारी अक्षर से भी परे श्री युगल स्वरूप के चरण कमल हैं, जो सदा चेतन और चिद्घन स्वरूप की शोभा से भरपूर है ।

Nijanand App

श्लोक : ब्रह्मानन्दं परम् सुखदं केवलं ज्ञान मूर्तिम्,
द्वन्द्वातीतं गगन सदृशं तत्वमस्यादि लक्ष्यम् ।
एको नित्यं विमलमचलं सर्वदा साक्षि रूपं,
भावातीतं त्रिगुण रहितं सद्गुरं तं नमामि ॥

(स्कन्द पुराणे गुरूगीतायाम्)

पारब्रह्म के आनन्दमयी स्वरूप वाले, सर्वश्रेष्ठ आनन्द को देने वाले, अलौकिक ज्ञान के स्वरूप, सभी द्वन्दों से रहित, आकाश के समान व्यापक हृदय वाले, ''तुम ब्रह्म हो'' के कथन को दर्शाने वाले, सर्वदा निर्मल स्वरूप वाले, परिवर्तन से रहित एक रस रहने वाले, हमेशा ही सबके साक्षी रूप, मन के भावों से परे रहने वाले, सत, रज, तम के बन्धन से रहित उस एकमात्र सतगुरू को मैं प्रणाम करता हूं ।

श्लोक : यदक्षरं परं ब्रह्म तत्सूत्रमिति धारयेत् ।
सूचनात्सूत्रमित्याहुः सूत्रं नाम परं पदम् ।
तत्सूत्रं विदितं येन स विप्रो वेदपारगः ।

(ब्रह्मोपनिषद)

जो अत्यन्त श्रेष्ठ अक्षर ब्रह्म रूपी सूत्र है, उसे धारण करना चाहिए । पारब्रह्म के प्रति संकेत करने के कारण उसे सूत्र कहते हैं । उस श्रेष्ठ धाम को ही सूत्र कहा गया है । उस सूत्र को जो जानता है वही विप्र वेद के रहस्य को जानने वाला कहा जाता है ।

श्लोक : शिखा ज्ञानमयी यस्य उपवीतं च तन्मयम् ।
ब्राह्मण्यं सकलं तस्य इति ब्रह्मविदो विदुः ॥
चिदेव पंचभूतानि चिदेव भुवनत्रयम् ॥

(ब्रह्मोपनिषद)

जिसकी शिखा ज्ञानमयी स्वरूप वाली है तथा यज्ञोपवीत भी ज्ञानमयी स्वरूप वाला है । उसे सब कुछ ब्रह्मरूप दिखाई देता है । इस प्रकार उसे ब्रह्मज्ञानी कहते हैं । उस ब्रह्मज्ञानी की दृष्टि में पांचों तत्व तथा तीनों लोक भी चेतन की ही तरह प्रतीत होते हैं ।

श्लोक : आनन्द विज्ञान घन एवास्मि ।
तदेव मम् परमं धाम तदैव शिखा तदेवोपवीतं च ।

(परमहंस उपनिषद)

मैं आनन्दमय, विज्ञानमय स्वरूप वाला हूं । वह ही मेरा परमधाम है, वह ही शिखा है और वह ही यज्ञोपवीत है ।

Nijanand App

सेवन है पुरूषोत्तम, गोत्र चिदानंद जान ।
परम किशोरी इस्ट है, पतिव्रत साधन मान ॥७८॥

(४) हम उत्तम पुरूष (अक्षरातीत पारब्रह्म) की सेवा पूजा (भक्ति) करते हैं । (५) हमारा गोत्र चिदानन्द है अर्थात् चेतन और आनन्दमयी है । (६) हमारे इष्ट परम किशोरी श्यामा जी हैं । (८) पारब्रह्म को पति रूप में अनन्य भाव से प्रेम लक्षणा भक्ति द्वारा प्राप्त करने का हमारा साधन है ।

श्लोक : द्वाविमौ पुरूषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च ।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कुटस्थोऽक्षरः उच्यते ॥
उत्तमः पुरूषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः ।

(गीता १५/१६-१७)

संसार में दो पुरूष क्षर और अक्षर कहे जाते हैं । सभी प्राणी क्षर कहे जाते हैं तथा कूटस्थ पुरूष अक्षर कहा जाता है । उत्तम पुरूष अक्षरातीत इनसे परे दूसरा ही है जो परमात्मा कहा जाता है । वह अविनाशी है, सबका स्वामी है और तीनों लोकों को अपनी सत्ता के स्वरूप से धारण करता है ।

श्लोक : अनादिमादिं चिदरूपं चिदानन्दं परं विभुः ।
वृन्दावनेश्वरं ध्यायेत त्रिगुणस्येक कारणम् ॥

(वाराह संहितायाम् गोत्रस्य साक्षी)

चेतन और आनन्दमय, अनादि स्वरूप वाले, मूल से ही चेतन स्वरूप वाले, अति श्रेष्ठ, वृन्दावन के स्वामी का ध्यान करना चाहिए, जो त्रिगुण के कारण हैं । (वृन्दावन में अक्षरातीत पारब्रह्म ने लीला की थी । इस श्लोक में वृन्दावनेश्वर के कथन से यही संकेत है) ।

श्लोक : सिद्धिरूपासि चाराध्या राधिका जीवनं मम् ।
ये स्मृत्वा भावयन्ति त्वां तैरहं भावितः सदा ।
तत्र में वास्तवं रूपं यत्र यत्र भवद्दृशः ।
ममेष्टं च ममात्मा त्वं राधैव राध्यते मया ॥

(पुराण सांहिता ६/३६, ३८)

श्री कृष्ण जी कहते है कि हे राधा ! तुम अलौकिक स्वरूप वाली हो । मेरे द्वारा पूजे जाने योग्य हो। मेरा जीवन हो । जो तुम्हारा स्मरण करके तुम्हें प्रसन्न करते हैं तो उनके द्वारा मुझे ही प्रसन्न किया जाता है । जहां-जहां ऐसा होता है वहां-वहां ही मेरा वास्तविक रूप होता है । तुम मेरी प्रिया हो और मेरी आत्मा हो । मुझसे ही तुम्हारी भी पूर्णता है ।

Nijanand App

श्लोक : नाहं वेदैर्न न तपसा न दानेन न चेज्यया ।
भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवं विधोऽर्जुन ॥

(गीता ११/५३, ५४)

न तो मैं वेदों से प्राप्त होता हूं । न तप से, न दान से और न यज्ञ से । हे अर्जुन ! मैं केवल अनन्य प्रेम लक्षणा भक्ति से ही प्राप्त होता हूं ।

श्री जुगल किशोर को जाप है, मंत्र तारतम सोए ।
ब्रह्म विद्या देवी सही, पुरी नौतन मम जोए ॥७९॥

(७) हम युगल किशोर अक्षरातीत श्याम श्यामा जिन्होंने नित्य वृन्दावन में राधा-कृष्ण के तन में बैठकर लीला की थी । वे साक्षात् परमधाम में विराजमान है, उनका हम जप करते हैं । (९) हमारा मन्त्र तारतम है । (११) हमारी देवी अखण्ड ब्रह्म विद्या है । (१०) नवतनपुरी हमारी पुरी है ।

श्लोक : राधया सह श्रीकृष्णं युगलं सिंहासने स्थितम् ।
पूर्वोक्तं रूप लावण्यं दिव्य भूषा श्रृंगम्बरम् ॥

(वाराह संहिता)

पहले वर्णन किए हुए रूप एवं लावण्य से युक्त, अलौकिक वस्त्र आभूषणों से सुशोभित श्री कृष्ण जी राधा के साथ युगल स्वरूप के रूप में सिंहासन पर विराजमान हैं ।

श्लोक : स्वकृत विचित्रयोनिषु विशन्निव हेतुतया,
तरतमतश्चकास्स्यनलवत स्वकृतानुकृतिः ।
अथ वितथास्वमूष्ववितथं तव धाम समं,
विरजधियोऽन्वयन्त्यभिविपण्यव एक रसम् ॥

(भागवत १०/८७/१९)

हे परमात्मा ! अपने द्वारा बनाई हुई विचित्र प्रकार की योनियों में कार्य कारण रूप से प्रवेश करते हुए आप ही लकड़ी में अग्नि की भांति प्रतिबिम्बित हो रहे हैं किन्तु इस भेद को तारतम ज्ञान के द्वारा ही जाना जा सकता है । सदा अविनाशी एवं एक रस रहने वाले आपके धाम को केवल निर्मल बुद्धि वाले मानव ही प्राप्त कर पाते हैं ।

श्लोक : ॐ ब्रह्म विद्यां प्रवक्ष्यामि सर्वज्ञानम् उत्तमम् ।
यत्रोत्पत्ति लयं चैव ब्रह्माविष्णु महेश्वराः ॥

(ब्रह्म विद्योपनिषद)

अब मैं सभी ज्ञानों में उत्तम उस ब्रह्म विद्या के विषय में कहता हूं जिसके जानने पर ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव आदि देवों की उत्पत्ति एवं लय होने का ज्ञान हो जाता है ।

Nijanand App

अठोत्तर सौ पख साखा सही, साला है गौलोक ।
सतगुरू चरण को छेत्र है, जहां जाए सब सोक ॥८०॥

(११) १०८ पक्ष है । जो हमारी शाखा है । ८१ पक्ष वैकुण्ठ के, ८२ वां वल्लभाचार्य जी का, ८३वां कबीर जी का तथा २५ पक्ष परमधाम के हैं (१२) शाला हमारी गोलोक है क्योंकि वहां हमारी ब्रजलीला अखण्ड है । (१३) हमारे सद्गुरू श्री श्यामा महारानी जी के चरण ही क्षेत्र है जिनकी कृपा से सारे दुःख दूर होते हैं ।

सुख विलास मांहें नित ब्रन्दावन, रिष महाविष्णु है जोए ।
वेद हमारो स्वसं है, तीरथ जमुना सोए ॥८१॥

(१४) नित्य बृन्दावन के अन्दर हमारे सुख के विलास का स्थान है । (१५) महाविष्णु हमारे ऋषि है । वेद हमारा स्वसम् (श्री कुलजम स्वरूप) है । (१६) तीर्थ हमारी अखण्ड यमुना जी है जो परमधाम में है ।

सास्त्र श्रवण श्री भागवत, बुद्ध जागृत को ज्ञान ।
कुल मूल हमारो आनन्द है, फल नित्य विहार प्रमान ॥८२॥

(१७) हमारा शास्त्र भागवत है जो अखण्ड बृज और नित्य वृन्दावन का प्रमाण देता है । (१८) हमारा ज्ञान जागृत बुद्धि का है जो नवतनपुरी में उतरा है । भागवत स्वप्न की बुद्धि का ज्ञान है । (१९) हमारे कुल का मूल पारब्रह्म के आनन्द स्वरूप श्यामा महारानी है । (२०) इस सम्प्रदाय के ज्ञान का फल अक्षरातीत के परमधाम की लीला है जो हमारी है ।

दिव्य ब्रह्मपुर धाम है, घर अक्षरातीत निवास ।
निजानन्द है सम्प्रदा, ए उत्तर प्रस्न प्रकास ॥८३॥

(२१) हमारा धाम दिव्य ब्रह्मपुर है । (२२) अक्षरातीत हमारे धनी हैं । इसलिये उनका घर ही हमारा निवास स्थान है । (२३) हमारे सद्गुरू श्री निजानन्द स्वामी है जो अक्षरातीत पारब्रह्म के आनन्द स्वरूप श्यामा जी हैं । उन्होंने ही इस सम्प्रदाय को चलाया है । इसलिये हमारे सम्प्रदाय का नाम श्री निजानन्द सम्प्रदाय है । ये आपके एक-एक प्रश्नों का उत्तर है ।

धनी श्री देवचन्द्र जी निजानन्द, तिन प्रगट करी सम्प्रदा ऐह ।
तिनथें हम यह लखी हैं, हम द्वार पावें अब तेह ॥८४॥

पारब्रह्म अक्षरातीत के आनन्द स्वरूप श्री श्यामा जी ने श्री देवचन्द्र जी के तन में प्रवेश किया उन्होंने ही इस सम्प्रदाय को चलाया है । उनकी कृपा से ही हमको परम तत्व का ज्ञान प्राप्त हुआ है । अब इस अज्ञान रूपी अन्धकार से भरपूर संसार से निकलने का एक मात्र मार्ग यही सम्प्रदाय है और इससे ही उस द्वार अर्थात् उनके चरण कमलों तक पहुंच सकते हैं ।

Nijanand App

तो या भांत चर्चा बहुत, भई मेला में जान ।
साख दई सब सास्त्र की, अवगत गति जो प्रमान ॥८५॥

इस प्रकार हे सुन्दरसाथ जी ! उस मेले में बहुत प्रकार से चर्चा हुई जिसमें सब शास्त्रों के प्रमाण दे देकर समझाया। इस अखण्ड मार्ग को कोई जानता नही था लेकिन शास्त्रों में लिखा है ।

प्रमाण : जिन जानो सास्त्रों में नहीं, है सास्त्रों में सब कुछ ।
पर जीव सृष्टि क्यों पावहीं, जिनकी अकल है तुच्छ ॥

(किंरतन ७३/२६)

तहां पैतीसा के बरस में, भये निसान धूम्रकेत ।
खय भई एक मास की, इन समै जगत भयो अचेत ॥८६॥

फिर वहां संवत् १७३५ के साल में धुम्रकेतु (पुच्छल तारा) प्रातः जब जाहिर हुआ और उस वर्ष एक माह भी कम था, ये प्रमाण भविष्य के ग्रन्थों में लिखा था । इतना होने पर भी जगत ने (धर्माचार्यो ने) विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार श्री प्राणनाथ जी को पहचाना नहीं । परन्तु शालिवाहन की ध्वजा को हटाकर विजयाभिनन्द बुद्ध जी की ध्वजा को लहराया तथा सबने यह स्वीकार किया कि आप ही विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार हैं ।

साके विजयाभिनन्द के, पुकारत सब कलाम ।
ताको सबे पढ़त हैं, पर भूली खलक तमाम ॥८७॥

आप श्री जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! उस शाका विजयाभिनन्द के विषय में सभी ग्रन्थों में कहा गया है । और ग्रन्थों में पढ़ते हैं परन्तु सारा संसार आज उन्हें भूला बैठा है ।

जीती फौज सिरे संसार की, कारज कारन विस्तार ।
तहाँ तमासा देखके, फेर के किया विचार ॥८८॥

इस प्रकार से आप श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार श्री प्राणनाथ जी ने सम्वत् १७३५ में सभी धर्माचार्यो पर विजय प्राप्त की । उनके जाहिर होने का यह कारज कारण पहले से ही लिखा हुआ था, जो हुआ । इस प्रकार हरिद्वार के मेले में आचार्यो की बुद्धि की अज्ञानता का तमाशा देखकर अपने सुन्दरसाथ को लेकर श्री जी दिल्ली आए ।

दाउद पाण्डे की हवेली में, साथ को छोड़े जब ।
हरद्वार से होए के, आए के मिले तब ॥८९॥

हरिद्वार चलते समय आप श्री जी बाकी सब सुन्दरसाथ को दिल्ली में दाउद पाण्डे की हवेली में छोड़कर गए थे । हरिद्वार से लौटने पर वे वहीं आकर मिले ।

Nijanand App

इन समें खिजमत में, रहता था गरीब दास ।
खान सामा खिताब दीवान का, कह्या कलाम खास ॥९०॥

इस समय गरीबदास जी सब सुन्दर साथ के लिए भोजन बनाते थे । इसलिये श्री जी उन्हें प्यार से खानसामा कहकर पुकारते थे । सब सुन्दरसाथ उन्हें दीवान साहब कहते थे । आप श्री जी ने उन्हें प्यार से यह शोभा बख्शी थी ।

एह लालदास को, हुआ था हुकम ।
इसी वास्ते आगे को, रखता था कदम ॥९१॥

श्री लालदास जी को सब ग्रन्थों की जिम्मेदारी श्री जी ने सौंपी थी (अर्थात् प्रमाण खोज-खोज कर दिखाना), इसलिये श्री लालदास जी धर्म कार्य में सबसे आगे रहते थे ।

(प्रकरण ३७, चौपाई १८१८)

फेर श्री राज आए दिल्ली, आए मिले सब साथ ।
मास चार इत भये, फेर साथ के पकड़े हाथ ॥१॥

हरिद्वार से आप श्री जी साहिब दिल्ली आए और सब सुन्दरसाथ से मिले । चार महीने तक दाऊद पाण्डे की हवेली में रहे । उसके पश्चात् जागनी का कार्य आरम्भ किया ।

इत विचार करके, राखें एक तरफ सरूप दे ।
लड़ें छड़े होए के, देखें कैसा काम होवे जेह ॥२॥

फिर सब सुन्दरसाथ के साथ विचार-विमर्श किया कि सब महिला सुन्दरसाथ को किसी एकान्त जगह में छोड़कर औरंगजेब को पैगाम देने के वास्ते शरीयत से छड़े होकर जैसे भी सामना करना पड़ेगा, वैसे करेंगे ।

तब अनूप सहर को, सब साथ को ले चले ।
तहां एक हवेली लेय के, सब साथ को रखे ॥३॥

तब दिल्ली से अनूपशहर सब सुन्दरसाथ को साथ में लेकर गए तथा वहां एक हवेली लेकर सभी महिला सुन्दरसाथ को छोड़ दिया ।

इत रहत एक पाठक, अनूप सहर का चौधरी ।
दो दिन आया दीदार को, तिन सों चरचा करी ॥४॥

अनूपशहर का एक चौधरी पाठक वहां रहता था । वह दो दिन श्री जी के दर्शन और चर्चा सुनने के लिए आया । श्री जी ने जाग्रत बुद्धि के तारतम ज्ञान से उन्हें चर्चा सुनाई ।

Nijanand App